EDII

Rajasthan Patrika

June 03, 2023

उद्यमिता जागरूकता शिविर : विशेषज्ञों ने महिलाओं को दिए उद्यमशीलता के टिप्स

महिलाएं सफल उद्यमी भी बन सकती हैं क्योंकि उनमें पुरुषों से ज्यादा विल पॉवर

पत्रिका न्यूज नेटवर्क
patrika.com

उज्जैन. औद्योगिक क्षेत्र में पुरुषों की तरह महिला उद्यमी भी देश की अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इसके बावजूद पुरुष व महिला उद्यमियों में कुछ अंतर है। देखा गया है, पुरुष उद्यमियों में प्रतिस्पर्धा और अचीवमेंट की ललक होती है। महिला उद्यमियों में स्वतंत्र और अपने पैरों पर खड़े होने की ललक तुलनात्मक ज्यादा होती है। यही विल पॉवर उनका ऐसा श्रेष्ठ गुण है जो उन्हें सफल उद्यमी के रूप में सफलता दिलाता है।

महिलाओं ने देश की अर्थव्यवस्था में भी योगदान दिया : पटेल

राष्ट्रीय महिला आयोग और भारतीय उद्यमिता संस्थान ने शुक्रवार को विक्रम कीर्ति मंदिर में उद्यमिता जागरूकता शिविर आयोजित किया। कार्यक्रम का शुभारंभ करते हुए राज्यपाल मंगूभाई पटेल ने कहा, आज पांच उद्यमियों में से एक उद्यमी महिला उभरकर सामने आ रही है। महिलाओं ने न केवल परिवार बल्कि देश की अर्थव्यवस्था में योगदान दिया है। मंत्री मुंजपारा महेंद्रभाई ने कहा, आज ऐसा इकोसिस्टम विकसित करने की जरूरत है जिससे महिला उद्यमियों की कैपेसिटी बिल्डिंग की जा सके। इस दौरान राष्ट्रीय महिला आयोग अध्यक्ष रेखा शर्मा, सचिव मीनाक्षी नेगी मौजूद रहीं।

तीन बातें जरूरी

1. नॉलेज- सरकार की, फाइनेंशियल इंस्टीट्यूट की स्कीम क्या है, बिजनेस अपार्च्युनिटी क्या और कितनी व्यवहारिक है।

2. स्किल- मार्केट सर्वे से जानेंगे किस चीज की कितनी डिमांड है। विभिन्न प्रोजेक्ट के बीच डिमांड सप्लाय का गैप क्या है। इस गैप में हमारे के लिए क्या अवसर है आदि।

3. एप्टिट्यूट- उद्यमिता में कौशल से महत्वपूर्ण विचार है। किस नजरिए से समाज की समस्याओं में अवसर को देखते हैं। दायरे से निकल कर क्या नया सोचते हैं, नई पहल करते हैं।

विक्रम कीर्ति मंदिर में अतिथि और उपस्थित महिलाएं।

महिलाओं ने पूछे सवाल

सवाल- रेगुलेशन लाइसेंस, फंडिंग आदि को लेकर समस्या आती है। किनसे मार्गदर्शन लें?

जवाब- कई संस्थाएं हैं, जो उद्योग प्रारंभ करने में मार्गदर्शन देती हैं। जिला उद्योग विभाग से सहयोग लिया जा सकता है।

सवाल- हैंडीक्राफ्ट व मैन पॉवर सप्लाय का कार्य है। मार्केटिंग व लोन नहीं मिलने की समस्या है, क्या करें।

जवाब- हैंडी क्राफ्ट के लिए सीएसआर फंडिंग या अन्य कार्यक्रम चलते हैं, मदद ले सकते हैं। मैन पॉवर सप्लाय में लोन के लिए वर्क आर्डर के जरिए प्रयास कर सकते हैं।

सवाल- होम स्टे की शुरुआत की है, इसे कैसे बढ़ा सकती हूं।

जवाब- ऑनलाइन मार्केटिंग, ई-बुकिंग का उपयोग बढ़ाएं। एमपी टूरिज्म से सहयोग लें।

सवाल- मैं इको फ्रेंडली पेंसिल बनाती हूं। इसकी लागत 8 रुपए है और 10 रुपए में बेचती हूं। बाजार में तीन रुपए में सामान्य पेंसिल मिलती है। अपना प्रोडक्ट कैसे सेल करूं।

जवाब- इको फ्रेंडली ही आपके प्रोडक्ट की विशेषता है, इसकी मार्केटिंग करें।

सवाल- सामाजिक उद्यमिता के लिए क्या सहयोग मिलता है। पंजीयन, लोन, बिल पास की समस्या आती है।

जवाब- सोशल उद्यमिता के लिए प्रथक से प्रोग्राम शुरू किया है। उससे जुड़कर सहयोग ले सकते हैं।

बोले विशेषज्ञ

दायरे से बाहर आएं

एक कागज पर बने नो डॉट्स को चार लाइन से क्रास करने के गेम में अधिकांश लोग उन डॉट्स में उलझ कर रह जाते हैं। जो नया सोचता हैं, सफल हो जाता हैं। उद्यमिता भी ऐसा ही है, कुछ हटकर सोचने और उस पर काम करने की आदत सफल उद्यमी बनाती है। एक घरेलू महिला जब कुछ अलग पकवान बनाने का सोचती है, यह उसकी नैसर्गिक उद्यमिता स्किल है। नया सोचना, सृजनात्मकता और संघर्ष उद्यमिता के आधार हैं।
- डॉ. राकेश डंड, सेवानिवृत्त प्रोफेसर

जीवन पद्धति है उद्यमिता

उद्यमिता सिर्फ एक करियर नहीं है, यह जीवनपद्धति है। लाइफ स्किल है, स्टेट ऑफ माइंड है। उद्यमिता में जो एप्टीट्यूट है, इसकी सबसे ज्यादा महत्ता होती है। सामान्य व्यक्ति के लिए घर से निकलने के साथ समस्या शुरू हो जाती है, जैसे रिक्शा नहीं मिलता, समय से पहुंच नहीं पाते, विभाग से जानकारी नहीं मिलती है। सामान्य व्यक्ति के लिए यह समस्या है लेकिन उद्यमी के लिए यह अवसर है।
- डॉ. सुनील शुक्ला, डायरेक्टर इंटरप्रिन्योरशिप डेवलपमेंट इंस्टीट्यूट ऑफ इंडिया

स्टार्टअप में महिला सबसे आगे

आज भारत में स्टार्टअप में महिलाएं सबसे आगे हैं। यही नहीं साठ प्रतिशत महिलाएं ऋण लेकर उद्यम चला रही हैं। भारत सरकार ने महिलाओं को आगे बढ़ाने के लिए कई योजनाएं संचालित कर रखी हैं। आवश्यकता है, तो महिलाओं के लिए नेटवर्किंग प्लेटफॉर्म की, जहां वे अपनी बात रख सकें। साथ ही इनके मेंटरशिप की भी आवश्यकता है। **- रेखा शर्मा,** अध्यक्ष राष्ट्रीय महिला आयोग

उद्यमिता की दो बड़ी रिस्क

1. सिंकिंग द बोट

इसका मतलब नाव का डूबना है। मसलन राशि लगाई, प्रोडक्ट लांच किया लेकिन कमजोर तैयारी या अन्य किसी कारण से प्रोडक्ट फेल हो गया।

2. मिसिंग द बोट

इसका मतलब नाव छूटना है। मार्केट सर्वे किया, डिजाइन तय की, बाजार को देखा आदि तैयारी की लेकिन इसमें इतना समय लगा दिया कि लांचिंग से पहले अन्य ने वैसा ही प्रोडक्ट लांच कर दिया।

क्यूआर कोड स्कैन कर पढ़ें विस्तृत खबर...